# कथा सरिता

## राजा ने जाना निरासक्ति का श्रेष्ठत्व

उपनिषदों में एक कथा आती है। एक राजा के मन में एक बहुत ही आकर्षक और मज़बूत महल के निर्माण का विचार आया। उसने अपने मंत्री से विचार-विमर्श किया, सभासदों व परिजनों से राय मांगी। सभी ने उसके विचार से सहमति जताई। राजा ने उत्साहित होकर योग्य कारीगरों को बुलवाया और नक्शा तैयार करवाकर उन्हें महल के निर्माण कार्य में लगा दिया। कुछ ही समय में राजा की कल्पना ने साकार रूप ले लिया और महल बनकर तैयार हो गया। राजा ने महल में प्रवेश के अवसर पर एक बड़ा आयोजन किया और दूर-दूर के राजाओं को निमंत्रित किया। सभी ने महल की दिल खोलकर प्रशंसा की। महल हर कोण से इतना खूबसूरत और दृढ़ था कि उसमें कोई नुक्स नज़र ही नहीं आता था। एक बार एक सन्यासी राजा से मिलने आया। राजा ने उसका सत्कार किया। सन्यासी काफी देर तक राजा से वार्तालाप करता रहा, किंतु महल के विषय में एक शब्द भी नहीं बोला। राजा को हैरानी हुई। अंततः राजा ने सन्यासी को महल घुमाया और उसकी भव्यता और मजबूती के विषय में बताकर पूछा, 'क्या मेरे महल में कोई कमी है, जो आपने इसकी प्रशंसा में एक शब्द भी नहीं कहा?' तब सन्यासी बोला, 'राजन! तुम्हारा महल वास्तव में बहुत सुंदर और मज़बूत है। यह बहुत लंबे समय तक नष्ट नहीं होगा, किंतु क्या इतना ही स्थिर इसमें रहने वाला होगा? बस, इसी एक कमी के कारण मैंने महल की प्रशंसा नहीं की।' राजा सन्यासी की बात की गहराई को समझकर चुप हो गया। कथा दो तथ्यों की ओर संकेत करती है, जीवन की क्षणभंगुरता और मन की अस्थिरता। जो जीवन की अस्थिरता को समझकर मन को हर प्रकार की लालसा से मुक्तकर निरासक्ति में स्थिर कर ले, वही सुख-दुःख से परे होकर अनिर्वचनीय आनंद की अनुभूति करता है।

## तीन सवाल

महाराज अकबर, बीरबल की हाज़िरजवाबी के बड़े कायल थे। उनकी इस बात से दरबार के अन्य मंत्री मन ही मन बहुत जलते थे। उनमें से एक मंत्री, जो महामंत्री का पद पाने का लोभी था, ने मन ही मन एक योजना बनाई। उसे मालूम था कि जब तक बीरबल दरबार में मुख्य सलाहकार के रूप में है उसकी यह इच्छा कभी पूरी नहीं हो सकती। एक दिन दरबार में अकबर ने बीरबल की हाज़िरजवाबी की बहुत प्रशंसा की। यह सब सुनकर उस मंत्री को बहुत गुस्सा आया। उसने महाराज को कहा कि यदि बीरबल मेरे तीन सवालों का उत्तर सही सही दे देता है तो मैं उसकी बुद्धिमता को स्वीकार कर लूंगा और यदि नहीं तो इससे सिद्ध होता है कि वह महाराज का चापलूस है। अकबर को मालूम था कि बीरबल उसके सवालों का जवाब ज़रूर दे देगा, इसलिए उन्होंने उस मंत्री की बात स्वीकार कर ली। उस मंत्री के तीन सवाल थे :- (1) आकाश में कितने तारे हैं? (2) धरती का केन्द्र कहां है? (3) सारे संसार में कितने स्त्री और कितने पुरुष हैं? अकबर ने फौरन बीरबल से इन सवालों का जवाब देने के लिए कहा और शर्त रखी कि यदि वह इनका उत्तर नहीं जानता है तो मुख्य सलाहकार के पद को छोड़ने के लिए तैयार रहे। बीरबल ने कहा, 'तो सुनिए महाराज' पहला सवाल, बीरबल ने एक भेड़ मंगवाई और कहा जितने बाल इस भेड़ के शरीर पर हैं आकाश में उतने ही तारे हैं। मेरे दोस्त, गिनकर तसल्ली कर लो, बीरबल ने मंत्री की तरफ मुस्कुराते हुए कहा। दूसरा सवाल, बीरबल ने ज़मीन पर कुछ लकीरें खींची और कुछ हिसाब लगाया। फिर एक लोहे की छड़ मंगवाई और उसे एक जगह गाड़ दिया और बीरबल ने महाराज से कहा, महाराज बिल्कुल इसी जगह धरती का केन्द्र है, चाहें तो आप स्वयं जांच लें। महाराज बोले ठीक है अब तीसरे सवाल के बारे में कहो। अब महाराज तीसरे सवाल का जवाब बड़ा मुश्किल है क्योंकि इस दुनिया में कुछ लोग ऐसे हैं जो ना तो स्त्री की श्रेणी में आते हैं और ना ही पुरुषों की श्रेणी में। उनमें से कुछ लोग तो हमारे दरबार में भी उपस्थित हैं जैसे कि ये मंत्री जी। महाराज यदि आप इनको मौत के घाट उतरवा दें तो मैं स्त्री-पुरुष की सही सही संख्या बता सकता हूं। अब मंत्री जी सवालों का जवाब छोड़कर थर-थर कांपने लगे और महाराज से बोले, महाराज बस-बस मुझे मेरे सवालों का जवाब मिल गया। मैं बीरबल की बुद्धिमानी को मान गया हूं। महाराज हमेशा की तरह बीरबल की तरफ पीठ करके हंसने लगे और इसी बीच वह मंत्री दरबार से खिसक गया।

## श्रद्धा के सहारे लक्ष्मण को मिला ज्ञान

गुरु से ज्ञान हासिल करने के लिए शिष्य में श्रद्धा भाव का होना बहुत आवश्यक है और यह श्रद्धा शिष्य में विनय के रूप में प्रकट होती है। इस संदर्भ में रामायण में एक अच्छा प्रसंग दिया गया है। लंका नरेश रावण अपने दुराचार के लिए कुख्यात था और इस वजह से लोगों की अश्रद्धा एवं घृणा का पात्र बन गया था, किंतु यह भी सत्य है कि वह परम ज्ञानी भी था। रावण वेद-शास्त्रों का महान ज्ञाता था। उसने ज्ञान की पराकाष्ठा को छू लिया था। बस, व्यवहार से उसने अपने ज्ञान का सही उपयोग नहीं किया। श्रीराम इस बात को भलीभांति समझते थे। वे रावण के ज्ञान को आदर की दृष्टि से देखते थे। ज्ञानवान होने के कारण उनके मन में रावण के लिए सम्मान था। इसलिए जब युद्धभूमि में रावण से उनका युद्ध हुआ और अंततः वह उनके बाणों से घायल होकर गिर पड़ा तो श्रीराम ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण से कहा, 'जाओ लक्ष्मण! रावण से उपदेश ग्रहण करो। वे ज्ञान की प्रतिमूर्ति हैं। तुम्हें उनसे वह दुर्लभ मार्गदर्शन मिलेगा, जो जीवन में सदैव काम आएगा।' रावण की मृत्यु निकट थी और वह बुरी तरह से घायल हो गया था। लक्ष्मण उसी अवस्था में रावण के पास पहुंचे और काफी देर तक उनके पास खड़े रहे, लेकिन रावण ने मार्गदर्शन देना तो दूर एक शब्द भी नहीं कहा। लक्ष्मण ने श्रीराम के पास आकर अपना यह अनुभव सुनाया। तब राम ने उन्हें समझाया, 'तुम विनयपूर्वक एक विद्यार्थी की भांति महापंडित, परमज्ञानी रावण के पास जाओ तो वे तुम्हें निराश नहीं करेंगे।' इस बार लक्ष्मण, श्रीराम के बताए हुए भाव को ग्रहण कर रावण के पास गए तो रावण ने उन्हें राजनीति का महत्वपूर्ण उपदेश दिया। वस्तुतः श्रद्धा के माध्यम से गुरु, विद्यार्थी की जिज्ञासा और पात्रता की परीक्षा लेता है। अपेक्षित श्रद्धा भाव से ही विद्यार्थी, शिष्य बनकर गुरु से ज्ञान पाता है।

## सब समान

एक बार की बात है। सूरज, हवा, पानी और किसान के बीच अचानक तनातनी हो गई। बात बड़ी नहीं थी, छोटी-सी थी कि उनमें बड़ा कौन है? सूरज ने अपने को बड़ा बताया तो हवा ने अपने को, पानी और किसान भी पीछे न रहे। उन्होंने अपने बड़े होने का दावा किया। आखिर तिल का तार बन गया। खूब बहस करने पर भी जब वे किसी नतीजे पर नहीं पहुंचे तो चारों ने तय किया कि वह कल से कोई काम नहीं करेंगे। देखें, किसके बिना दुनिया का काम रुकता है। पशु-पक्षियों को जब यह मालूम हुआ तो वे दौड़े आए। उन्होंने उनके मेल का रास्ता खोजने का प्रयत्न किया पर उन्हें सफलता नहीं मिली। लोग हैरान होकर चुप हो गए। पर दुनिया का काम रुका नहीं। जहां मुर्गा नहीं बोलता, वहां क्या सवेरा नहीं होता? चारों बड़े ही कमेरे थे। खाली बैठे, तो उन्हें थोड़ी ही देर में घबराहट होने लगी। समय काटना भारी हो गया। उनका अभिमान गलने लगा। आखिर बड़ा कौन है? छोटा कौन है? सबके अपने-अपने काम हैं। बड़ा कोई आन से नहीं, काम से होता है। सबसे ज़्यादा छटपटाहट हुई सूरज को। अपने ताप से स्वयं जलने लगा। उसने अपनी किरणें बिखेरनी शुरु कर दी। निकम्मे बैठे होने से हवा का दम घुटने लगा तो वह भी चल पड़ी। इसी तरह पानी और किसान भी अपने-अपने काम में लग गए। वे अच्छी तरह समझ गए कि संसार में न कोई छोटा है, न कोई बड़ा है। सब समान हैं। छोटे-बड़े का भेद तो ऊपरी है।

## सूचना

वैल्यू एज्यूकेशन ऑफिस, शान्तिवन में दो मास के लिए हिन्दी टाइपिंग और ग्राफिक्स डिज़ाइन करने हेतु दो सेवाधारी भाइयों की आवश्यकता है। अनुभवी भाई ही निम्न नम्बर पर सम्पर्क करें: 09414003961

सेवा में
ब्र.कु.मृत्युंजय, शान्तिवन

**गया-ए.पी. कॉलोनी (विहार)।** शिवरात्रि पर झंडा फहराने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में द्वारिको सुंदरानी,सेक्रेट्री समन्वय आश्रम, ब्र.कु.सुनीता, आर.के.खंडेलवाल,कमिशनर मगध रेंज, डॉ.पी. शेखर,नेत्र विशेषज्ञ, शांति प्रिय भाई,सेक्रेट्री अखिल भारतीय बौद्ध भिक्षु संघ,बौद्ध गया।

**गुड़गांव-हरियाणा।** महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में हुए कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए म्यूनीसिपल कमिटी के डिप्युटी मेयर यशपाल बत्रा, ब्र.कु.रंजना तथा अन्य।

**झालावाड़-राज.।** शिव जयन्ती के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए ब्र.कु.मीना, वकील विष्णु प्रसाद पाटीदार तथा अन्य।

**जम्मू।** महाशिवरात्रि पर्व पर झंडा फहराने के पश्चात् मुख्य अतिथि गुलाम हसन मीर,कृषि मंत्री, पूर्व मंत्री आर.एस.चिब, ज़ेड.ए. भट्टी, स्वामी कुमार, ब्र.कु.सुदर्शन, ब्र.कु.रविंदर तथा अन्य।

**गांधीनगर-जम्मू।** शिवरात्रि पर ध्वजारोहण के दौरान पूर्व मंत्री मूला राम, पूर्व कॉरपोरेटर पवन सिंह तथा ब्र.कु.निर्मल।

**केशोद-गुज.।** 'शिव जयन्ती महोत्सव' कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण के पश्चात् समूह चित्र में डॉ. सी.डी. लाडाणी, रोटरी क्लब के प्रमुख कांतिभाई चुडासमा, रजनी भाई फडदु, विधायक अरविंद लाडाणी, जयेश भाई, ब्र.कु.रूपा, ब्र.कु.मीता, ब्र.कु.गीता तथा अन्य।